P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

यमदग्नि आश्रम, थान उत्तरकाशीः शैक्षिक व्यवस्था एवं महत्व

पंचम सिंह
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय,
देहरादून, उत्तराखण्ड

अनूप कुमार पोखरियाल
सहायक आचार्य,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
हिमगिरी जी विश्वविद्यालय,
देहरादून, उत्तराखण्ड

सारांश

उत्तराखण्ड हिमालय के गढवाल क्षेत्र को प्राचीन ऋषि–मुनियों ने अपनी तपस्या एवं कर्मभूमि के लिए चुना। इस कम में अलकनन्दा तट पर नर –नारायण(बदरीकाश्रम), मन्दाकिनी तट पर महर्षि अगस्त्य, यमुना तट पर महर्षि यमदग्नि अमृतगंगा तट पर महर्षि अत्रि आदि का नाम प्रमुखता से आता है। इन स्थानों पर इन्होने अपने ज्ञान एवं कार्य के द्धारा इस क्षेत्र के लोगों का मार्ग प्रशस्त किया। वहीं वर्तमान में वे वहां के आराध्य देव के रूप में भी स्थापित हो गये। प्रस्तुत शोध में महर्षि यमदग्नि के संदर्भ में समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : आश्रम शिक्षा, यमदग्नि, अध्यात्मिक शिक्षा ।

प्रस्तावना

आर्य संस्कृति का विकास वैदिक काल में ही हुआ था, इसी काल को भारतीय शिक्षा का आधार भी माना जाता है। वैदिक कालीन शिक्षा को कई नामों से जाना जाता है– हिन्दू शिक्षा , प्राचीन भारतीय शिक्षा, ब्राहमणीय शिक्षा, गुरूकुल शिक्षा आदि। भारतीय शिक्षा का प्रारम्भ लगभग 4000 वर्ष पूर्व हुआ था किन्तु उसका व्यवस्थित अध्ययन वैदिक काल से ही मिलता है। वेद का अर्थ है ज्ञान वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य था साथ ही आत्मा से परमात्मा का मिलन तथा मोक्ष की प्राप्ति, साथ ही सांसारिक कर्तव्यों की अवहेलना का भाव भी नहीं था। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति को गुरू ऋण, पितृ ऋण एवं देव ऋण से मुक्त होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, इस आदर्श महान शिक्षा व्यवस्था का विकास गुरूकुल एवं आश्रमों में ही हुआ था। प्राचीन महर्षि नगरों एवं ग्रामों के कोलाहल भरे वातावरण से दूर प्रकृति के सुरम्य स्थानों पर अपने आश्रमों का निर्माण करते थे। वहीं पर इनके सानिध्य में ब्रहमचारी आध्यात्मिक एवं जीवन यापन की शिक्षा अपने वंश के कार्यानुसार ग्रहण करते थे। वैदिक काल के महान ऋषियों का सम्बन्ध हिमालय क्षेत्र से प्रगाढ़ रूप से रहा है। इस अध्ययन में महर्षि यमदग्नि के आश्रम की स्थिति, उनके जीवन एवं आश्रम में दी जाने वाली शिक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा रहा है।

हिमालय क्षेत्र ने ब्रहमज्ञानी ऋषियों को अपनी ओर आकर्षित किया इनमें से एक थे महर्षि भृगु के पौत्र जमदग्नि (यमदग्नि) इन्होनें अपना कार्य क्षेत्र यमुना नदी के तट पर वर्तमान थान गॉव, जिला उत्तरकाशी में बनाया। ऋषि यमदग्नि आयुर्वेद एवं रसायन विज्ञान के महान पण्डित थे, इनकी पत्नी भगवती रेणुका थी। इनके पुत्र परशुराम थे, जिन्होंने क्षत्रियों पर 21 बार विजय प्राप्त की, इसका पुराणों में भी वर्णन मिलता है। परशुराम जी को सैनिक शिक्षा शिव जी ने ही दी थी। हिमालय क्षेत्र ही शिव क्षेत्र है। इस क्षेत्र के प्रमुख शिव मन्दिर हैं– उत्तरकाशी में विश्वनाथ एवं रूद्रप्रयाग में केदारनाथ। तथा केदारनाथ की गणना बारह ज्योर्तिलिंगों में से एक में की जाती है। यमुना को यमराज की बहिन कहा जाता है। यह भी संयोग है कि यमदग्नि जी ने भी अपना निवास यमुना के किनारे ही बनाया था।

अध्ययन का उद्देश्य

1. यमदग्नि आश्रम का शैक्षणिक महत्व एवं आश्रम में दी जाने वाली शिक्षा।
2. यमदग्नि आश्रम के आध्यात्मिक एवं सामाजिक महत्व का अध्ययन करना।

अवधारणाएं

1. यमदग्नि आश्रम ने प्राचीन शिक्षा एवं औषधिय शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका क्षेत्र में निभाई होगी।
2. यमदग्नि आश्रम द्वारा आध्यात्मिक एवं सामाजिक दायित्वों की भावना का विकास हुआ होगा।

महर्षि आश्रम मे संचालित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्थानीय बुजुर्ग व्यक्तियों, शिक्षित व्यक्तियों, मन्दिर के पुजारीगण आदि(कुल संख्या–100) से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई, उनसे प्राप्त सूचनाओं का उल्लेख निम्न सारणी में वर्णित है।

सारणी सं0– 01

क्र0 सं0	आध्यात्मिक शिक्षा	ज्योतिष शिक्षा	सैनिक शिक्षा	आयुर्वेद चिकित्सा/शल्य शिक्षा	योग/प्राणायाम शिक्षा	कृषि पशुपालन शिक्षा
सं0–100	100	15	75	95	60	65
प्रतिशत	100%	15%	75%	95%	60%	65%

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से विदित होता है, कि महर्षि यमदग्नि आश्रम की शिक्षा व्यवस्था में आध्यात्मिक शिक्षा 100%, जयोतिष शिक्षा 15%, सैनिक शिक्षा 75%, आयुर्वेद चिकित्सा/शल्य शिक्षा 95%, योग/प्राणायाम शिक्षा 60%, कृर्षि पशुपालन के क्षेत्र में 65% व्यक्तियों ने सकारात्मक उत्तर दिये। ये आँकड़े हमारी प्राचीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों का पूर्वतः पुष्ट करते हैं।

वर्तमान समय में यमदग्नि ऋषि के निवास स्थान पर उनका मन्दिर बनाया गया है। यहाँ के लोग उनकी देवता के समान पूजा करते हैं एवं उनकी पत्नी रेणुका इस क्षेत्र की अराध्य देवी है, इनके पुत्र परशुराम जी का मन्दिर उत्तरकाशी नगर में स्थित है। इनकी भी देवता के रूप में यहाँ के लोग पूजा करते हैं। स्कन्द पुराण के केदारखण्ड के अन्तर्गत इसका वर्णन मिलता है। यमदग्नि आश्रम यमनोत्री जाते हुये यमुना के बायें तट पर थान नामक गाँव में स्थित है। यह स्थान वर्तमान में नदी से लगभग 1 मील की दूरी पर स्थित है किन्तु प्राचीन काल में यमुना आश्रम के नजदीक ही बहती रही होगी, इसका प्रमाण वहाँ की मिट्टी में पाये गये गोल पत्थरों से आसानी से मिल जाता है,यह स्थान प्राकृतिक रूप से मनमोहक है।

इस क्षेत्र के निवासियों की उनके प्रति अत्याधिक आस्था है,लगता है कि पूरा क्षेत्र ही उनसे प्रभावित था। हिमालय क्षेत्र को चमत्कारी औषधियों एवं जड़ी बूटियों का भण्डार माना जाता है। स्वभाविक है कि महर्षि ने उन्हीं औषधियों को स्वयं सिद्व किया होगा तथा अपने विद्यार्थियों को भी इसकी शिक्षा दी होगी। वर्ष 1803 में गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में भयंकर भूचाल आया था, साथ ही इस क्षेत्र में अनेक भौतिक विप्लवों के कारण यहाँ की प्रचण्ड वेग से बहती नदियों से बाढ़ आदि के कारण प्राचीन आश्रमों के अवशेष हमें नहीं मिल पा रहे हैं किन्तु वैदिक विद्वानों एवं पुरातत्वविदों ने कई स्थानों पर यज्ञवेदियां तथा आश्रमों के अवशेष ढूढें हैं।

इनके आश्रम में प्राचीन काल में कितने विद्यार्थी अध्ययन करते थे इनका स्पष्ट विवरण तथा उल्लेख प्राप्त नहीं हो पा रहा है। जमदग्नि ऋषि के मन्दिर के दांई ओर कल्पवृक्ष आज भी विद्यमान हैं जिसको मैं स्वयं देखकर आया हूँ, इसका छायाचित्र शोधार्थी के पास है और कहते है कि इस क्षेत्र के दर्शन मात्र से ही सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं तथा कल्पवृक्ष के अतिरिक्त कामधेनु गाय भी महर्षि के पास थी,इनका उल्लेख हमें केदारखण्ड पुराण में भी मिलता है, परशुराम महर्षि के पुत्र थे, जो महान योद्धा थे एवं सैनिक शिक्षा में प्रवीण थे। इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है, सैनिक शिक्षा का प्रारम्भिक ज्ञान उन्हें अपने परिवार से ही प्राप्त हुआ होगा। महर्षि यमदग्नि के आश्रम में आयुर्वेद एवं सैनिक शिक्षा भी दी जाती रही होगी। यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है, महर्षि के आश्रम के नीचे की ढलान की ओर समतल बड़े–बड़े खेत भी स्थित हैं। यह खेत अत्यधिक उपजाऊ हैं, जिनमें वर्तमान समय में ग्रामीण कृषि कार्य एवं पशुपालन करते हैं, इस क्षेत्र में जनसंख्या प्राचीन समय में काफी कम रही होगी। आश्रम में विद्यार्थियों को पशुपालन एवं कृषि का कार्य भी करना पड़ता रहा होगा।

केदारखण्ड के अध्याय 94 में परशुराम प्रसंग का हमें उल्लेख मिलता है, कि एक बार माता रेणुका ने अपनी बहिन के पति सहस्त्रबाहु को सेना सहित देखा जिनके पास घोड़ा, हाथी एवं महारथी हैं। उस राजा को देखकर रेणुका ने अपने मन में सोचा कि मेरी बहिन अत्यन्त भाग्यशाली है किन्तु मैं अभाव में जी रही हूँ। महर्षि ने उनके मन की पीड़ा को भांप लिया तथा रूष्ट होकर अपने पुत्रों को माता का सिर काटने का आदेश दिया किन्तु किसी भी पुत्र ने माता का सिर काटने का साहस नहीं किया। अन्त में उन्होनें परशुराम जी का स्मरण कर उनको ऐसा करने का आदेश दे दिया। परशुराम ने तत्काल माता का सिर काट डाला। महर्षि ने प्रसन्न होकर उनसे वरदाना मांगने को कहा परशुराम जी ने अपनी माता रेणुका को जीवित करने का वरदान पिता से मांगा, उनके वरदान से वे फिर जीवित हो गई। इस कथा से हम यह भी निष्कर्ष लगा सकते हैं कि तत्कालीन समय में महर्षि आयुर्वेद के साथ–साथ शल्य विद्या में भी पारंगत थे। महर्षि यमदग्नि ने गौवशं रक्षा ऋगवेद 8/90 में 16 मन्त्रों की रचना की है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि प्राचीन महर्षियों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा पूर्णतः आध्यात्मिक थी किन्तु अपनी योग्यता के अनुसार प्रत्येक महर्षि ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समाज को उचित राह भी दिखाई। प्राचीन काल में जिस क्षेत्र में जो महर्षि निवास करते थे, आज वे स्थल उन महर्षियों के प्रति लोगों की आस्था के केन्द्र बन गये है तथा लोग उन्हें भगवान के रूप में पूजने लगे हैं, यही कारण है कि माता रेणुका एवं महर्षि यमदग्नि यमुना घाटी के आराध्य देवी–देवता के रूप में प्रतिष्ठित होकर आज के समाज का पथ प्रदर्शित कर रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *स्कन्दपुराण अन्तर्गत केदारखण्ड पुराण, नौटियाल शिवानन्द, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 12 सम्मेलन मार्ग इलाहबाद, 3, 2009*

2. तिलाड़ी सम्मान (स्मारिका) तिलाड़ी सम्मान समिति बड़कोट उत्तराकाशी, असवाल उज्जवल सिंह सनराइज ऑफसेट प्रिंटर देहरादून, मई 2012
3. आर्यो का आदि निवास, मध्य हिमालय, सिंह भजन, भागीरथी प्रकाशन गृह टिहरी, 1986
4. भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, शर्मा आर0ए0 आर0 लाल बुक डिपो मेरठ, 2007 जमदग्नि ऋषि
5. https://hi.wikipedia.org/wiki/जमदग्नि ऋषि

Distributed by **Subscription/Declaration Form for the Publication of Paper in Journals/Magazine**

Social Research Foundation
Committed for quality education

128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011
Contact : 0512-2600745, 9335332333, 9839074762
E-mail : socialresearchfoundationkanpur@gmail.com * Website : www.socialresearchfoundation.com

Personal Details

1. Author .....
Designation :.....
Department :.....
College Website:.....
Residential Address (where journal to be post)
.....
.....
City.....Pin.....Country.....
Phone.....Mobile.....
E-mail:.....
2. Co-author .....
Phone :.....
Email .....
3. Co-author .....
Phone :.....
Email .....

Signature Date Introduced by

Payment Details (Any type of payment is not refundable)

I wish to **subscribe** ☐ **renew my subscription** ☐
Publish **a paper/article** ☐ Seminar/Workshop ☐
Others (Please Mention).....
Mode of Payment
BankDraft/Cheque No.....Date.....
for Rs.....drawn on.....
in favour of **"SRINKHLA EK SHODA"** payable at Kanpur.
If on-line pay (Transaction ID/UTR).....
transfer in **State Bank of India, Usmanpur, Kanpur (03752)**
Account No. 35204660434, IFS Code : SBIN0003752
in favour of **"INNOVATION THE RESEARCH CONCEPT"**
If on-line pay (Transaction ID/UTR).....
transfer in **Indian Bank, Saket Nagar, Kanpur (01628)**
Account No. 6606294002, IFS Code : IDIB000S150
in favour of **"SOCIAL RESEARCH FOUNDAION KANPUR"**
If on-line pay (Transaction ID/UTR).....
transfer in **Indian Bank, Saket Nagar, Kanpur (01628)**
Account No. 933846442, IFS Code : IDIB000S150
Pl. add **Rs. 100/- as BANK CHARGES,** if ourstanding cheques

Declaration Form by the Author(s) (Please read it carefully)

Photo of Author **1. Author** | Photo of Co-author **2. Co-author** | Photo of Co-author **3. Co-author**

I, hereby, declare that this paper/article/matter titled.....
.....
.....
and other information given in this form are true and original. Also, it is declared that above paper/article is not copied or not under review for another publication and not yet published anywhere and the above paper is within 4500 to 5000 words. The opinions and statements published are the responsibilities of mine/us and not policies overviews of the editor. **Publisher are fully authorize to publish my/our paper/article in any of the publication (**book journals/ magazines/ news paper/ articles**) according to the quality of the paper / language / review process of their policies.**

Also, it is in my knowledge that for publication, all rights reserved by Publisher, no part of their publication may be reproduced, stored in a retrieval system, used in a spreadsheet, or transmitted in any means- electronic, mechanical, photocopying or otherwise without prior permission in writing. The articles/papers originally published in other magazines / journals are reprinted with permission Publisher holds the copyright of the selection, sequence, introduction material, value addition, questions at the end and illustration.

The views expressed in these publications are purely personal judgements of the author(s) and do not reflect the views of the institute or the organizations with which they are associated.

All efforts are made to ensure that the published information is correct. The "Social Research Foundation"/publisher is not responsible for any error caused due to oversight or otherwise.

The publisher is not responsible for any discrepancy / inaccuracy in the paper / material / data provided by the Author(s). In case of any nuisance, the author(s) will be responsible for the inaccuracy / discrepancy and any type of claim.

All disputes will be subject to Kanpur Jurisdiction only.

Signature of Author **Signature of Co-authors**

Please note that if any matter found copied from any sources, fee will not be refunded and against such author(s) legal action may be taken under copyright act by competent authorities.